

16-संजीवनी विद्या का विस्तार

अध्याय 1: युगसाहित्य का सृजन, जिसे किए बिना कोई गति नहीं

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: वर्तमान स्कूली शिक्षा का मुख्य लक्ष्य क्या है?

उत्तर: वर्तमान स्कूली शिक्षा का लक्ष्य आवश्यक-अनावश्यक जानकारीयों सिर पर लादना और नौकरी-स्तर की आजीविका कमा लेने तक सीमित है।

2. प्रश्न: प्राचीनकाल में जिस ज्ञान को सबसे महत्वपूर्ण माना जाता था, उसका क्या नाम है?

उत्तर: प्राचीनकाल में जिस ज्ञान को सबसे महत्वपूर्ण माना जाता था, उसे 'विद्या' या 'मेधा' के नाम से जाना जाता था।

3. प्रश्न: युग-शिक्षण के लिए स्कूलों पर निर्भर क्यों नहीं रहा जा सकता?

उत्तर: स्कूलों पर निर्भर इसलिए नहीं रहा जा सकता क्योंकि उनमें युग-शिक्षण के विषयों का समावेश ही नहीं है और यह शिक्षा केवल पुस्तक-रटन से पूरी नहीं हो सकती। इसके लिए प्रत्यक्ष उदाहरणों का प्रेरणाप्रद माहौल चाहिए।

4. प्रश्न: युगचेतना-तंत्र के अंतर्गत कितने मनुष्यों को प्रशिक्षित करने की योजना है?

उत्तर: इस योजना के अंतर्गत ६०० करोड़ मनुष्यों को प्रशिक्षित किया जाना है।

5. प्रश्न: युग-शिक्षण के कोई पाँच आवश्यक विषय कौन-कौन से हैं?

उत्तर: युग-शिक्षण के आवश्यक विषय हैं: (१) व्यक्तित्व का समग्र विकास, (२) समाज-संरचना का नव निर्धारण, (३) अर्थ व्यवस्था, (४) सुलभ आजीविका की उपलब्धता, और (५) मनुष्य के चिन्तन, चरित्र और व्यवहार में शालीनता का समावेश।

6. प्रश्न: युगसाहित्य का सृजन क्यों आवश्यक समझा गया?

उत्तर: युगसाहित्य का सृजन इसलिए आवश्यक है ताकि नए युग के प्रसंग की पृष्ठभूमि और रूप रेखा के संबंध में तात्कालिक मार्गदर्शन प्रस्तुत किया जा सके।

7. प्रश्न: प्रदर्शनियाँ क्यों लगाई जाती हैं?

उत्तर: प्रदर्शनियाँ इसलिए लगाई जाती हैं ताकि लोग किसी सुव्यवस्थित विषय की जानकारी कम समय में प्राप्त कर सकें।

8. प्रश्न: युगसाहित्य के प्रचार-प्रसार में कौन-सी कठिनाइयाँ हैं?

उत्तर: प्रमुख कठिनाइयाँ हैं: देश की दो-तिहाई जनता का अशिक्षित होना, महँगाई के कारण लोगों की खरीदने में असमर्थता, शिक्षित लोगों की चटपटे साहित्य में रुचि, और प्रकाशन में बड़ी पूँजी की आवश्यकता।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, प्रचलित शिक्षा प्रणाली और 'विद्या' में क्या मौलिक अंतर है?

उत्तर: प्रचलित शिक्षा प्रणाली केवल नौकरी और आजीविका कमाने की जानकारी तक सीमित है, जबकि 'विद्या' या 'मेधा' वह ज्ञान है जो व्यक्ति को हर समस्या का निराकरण करने में स्वयं सक्षम बनाती है। विद्या व्यक्ति और समाज को एक नए ढाँचे में ढालने का प्रकाश देती है, जिसका संकेत भी वर्तमान शिक्षा में नहीं मिलता।

2. प्रश्न: 'युग-शिक्षण' का स्वरूप वर्तमान शिक्षा तंत्र से अधिक व्यापक और वजनदार कैसे है?

उत्तर: युग-शिक्षण का स्वरूप अधिक व्यापक है क्योंकि यह व्यक्तित्व विकास, समाज-संरचना, अर्थ-व्यवस्था, शालीनता, पारिवारिक संरचना में सुधार, शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य जैसे जीवन के हर पहलू को समेटता है। इसकी हर शाखा अपने आप में एक स्वतंत्र विषय है, जो इसे वर्तमान शिक्षा तंत्र से कहीं अधिक विस्तृत और प्रभावशाली बनाता है।

3. प्रश्न: "विलम्ब से बनने वाले किले या महल की तुलना में यही अच्छा है कि आज की आवश्यकता पूरी कर सकने वाली झोंपड़ी का ढाँचा अपने ही हाथों, अपने साधनों से खड़ा कर लिया जाए।" इस कथन का युगसाहित्य के संदर्भ में क्या अर्थ है?

उत्तर: इस कथन का अर्थ है कि बहुत बड़ी और आदर्श योजनाओं की प्रतीक्षा करने के बजाय, वर्तमान में उपलब्ध छोटे साधनों से ही युग-शिक्षण का कार्य तुरंत आरंभ कर देना चाहिए। युगसाहित्य का सृजन इसी दिशा में एक तत्काल उठाया गया कदम है, जो मार्गदर्शन का काम करेगा, भले ही वह अभी छोटा हो।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: युग-शिक्षण के लिए "प्रत्यक्ष उदाहरणों का प्रेरणाप्रद माहौल" क्यों अनिवार्य है और इसे कैसे बनाया जा सकता है?

उत्तर: यह माहौल इसलिए अनिवार्य है क्योंकि विद्या केवल किताबी ज्ञान से नहीं, बल्कि जीवन में उतारने से आती है। इसे बनाने के लिए ऐसे अध्यापक चाहिए जो स्वयं आदर्शों के प्रतीक हों और अपने साँचे में ढालकर छात्रों को प्रतिभावान व प्राणवान बना सकें, जो न केवल स्वयं बनें बल्कि दूसरों को भी प्रकाशित करें।

2. प्रश्न: आज की परिस्थितियों में, जब अधिकांश लोग मनोरंजन साहित्य पढ़ना पसंद करते हैं, युगसाहित्य को जन-जन तक पहुँचाने की सबसे प्रभावी रणनीति क्या हो सकती है?

उत्तर: स्रोतों के अनुसार, सबसे प्रभावी रणनीति बिक्री पर जोर न देकर, उसे हर शिक्षित को पढ़ाने और हर अशिक्षित को सुनाने की है। इसके लिए 'झोला पुस्तकालय' जैसी योजना अपनाई जा सकती है, जिसमें स्वयंसेवक बिना मूल्य के घर-घर साहित्य पहुँचाएँ, पढ़ाएँ और सुनाएँ। यह क्रम निरंतर चलता रह सकता है,

जैसा कि अगले अध्याय में बताया गया है।

अध्याय 2: एक लाख अध्यापकों द्वारा विद्या विस्तार का श्रीगणेश

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: युग-शिल्पियों से प्रतिदिन कितने अंशदान और समयदान की अपेक्षा की गई है?

उत्तर: प्रत्येक युग-शिल्पी से न्यूनतम २० पैसा नित्य का अंशदान और दो घण्टे का समयदान देने को कहा गया है।

2. प्रश्न: 'झोला पुस्तकालय योजना' क्या है?

उत्तर: यह एक योजना है जिसके तहत युग-शिल्पी अपने परिचय क्षेत्र में शिक्षित लोगों से संपर्क करके युगसाहित्य को बिना किसी मूल्य के घर पर पढ़ने के लिए पहुँचाते हैं और पढ़ लेने पर वापस ले आते हैं।

3. प्रश्न: 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका क्या है और मिशन के सूत्र-संचालक इसे क्या मानते हैं?

उत्तर: 'अखण्ड ज्योति' मिशन की प्रमुख हिन्दी मासिक पत्रिका है। मिशन के सूत्र-संचालक इसे अपनी 'संरचनात्मक सम्पत्ति' मानते हैं।

4. प्रश्न: एक 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका को कितने लोगों द्वारा पढ़ा या सुना जाता है?

उत्तर: निर्देशानुसार, हर अंक को प्रायः पाँच लोगों द्वारा पढ़ा या सुना जाता है, इस प्रकार पच्चीस लाख पाठकों तक यह पहुँचती है।

5. प्रश्न: लेखक का विश्वास है कि पच्चीस लाख परिजनों में से न्यूनतम कितने लोग युगचेतना का आलोक वितरण करने के कार्य में जुटेंगे?

उत्तर: लेखक का विश्वास है कि न्यूनतम एक लाख परिजन इस कार्य में अवश्य जुटेंगे।

6. प्रश्न: समयदान और अंशदान का पैसा कहाँ और कैसे खर्च किया जाना है?

उत्तर: यह समय और पैसा अपने ही सम्पर्क क्षेत्र में विद्या-विस्तार के लिए स्वयं के हाथों से खर्च किया जाना है, किसी और को देने की आवश्यकता नहीं है।

7. प्रश्न: एक से पाँच की गुणन-प्रक्रिया का क्या लक्ष्य है?

उत्तर: इसका लक्ष्य है कि एक प्रज्ञा-परिजन पाँच नए लोगों को जोड़े, और यह क्रम आगे बढ़ता रहे। यदि यह प्रक्रिया सफल होती है, तो चार-पाँच छलांगों में ही देश की पूरी जनता को सृजन-चेतना से अनुप्राणित किया जा सकता है।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: विद्या-विस्तार की योजना में "समर्थ चुम्बक" की उपमा किसके लिए और क्यों दी गई है?

उत्तर: यह उपमा प्राचीन काल के विद्या-विस्तारकों और आज के समर्पित युग-शिल्पियों के लिए दी गई है। जिस प्रकार एक समर्थ चुम्बक अकेले ही अपने आसपास के लौह-कणों को खींच लेता है, उसी प्रकार एक प्राणवान विद्या-विस्तारक भी बिना किसी की सहायता की प्रतीक्षा किए, अपने बलबूते पर लोगों को ढूँढने, इकट्ठा करने और प्रेरित करने में सफल हो सकता है।

2. प्रश्न: लेखक क्यों मानते हैं कि समयदान और अंशदान के लिए लोगों के "व्यस्तता-अभावग्रस्तता" के बहाने झूठे हैं?

उत्तर: लेखक का मानना है कि ये बहाने भावना-शून्य निष्ठुरता और संकीर्णता के कारण गढ़े जाते हैं। असली समस्या संसाधनों की कमी नहीं, बल्कि दूसरों से हड़पने की प्रवृत्ति है, जबकि अपना कुछ देने का विचार ही उन्हें असहनीय लगता है।

3. प्रश्न: विद्या-विस्तार आंदोलन को "सार्वजनीन, सार्वभौम" क्यों कहा गया है?

उत्तर: इसे सार्वजनीन और सार्वभौम इसलिए कहा गया है क्योंकि यह सभी जातियों, धर्मों और मान्यताओं वाले लोगों के लिए समान रूप से खुला है। इसका उद्देश्य किसी संकुचित क्षेत्र तक सीमित न रहकर, सूर्य की किरणों की तरह विश्वव्यापी बनना है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: "कहने-सुनने में योजना अटपटी-सी लगती है, पर कार्य करने वाले के लिए इस संसार में कुछ भी कठिन नहीं है।" इस कथन के माध्यम से लेखक पाठकों की किस मानसिकता को चुनौती दे रहे हैं और उन्हें क्या करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं?

उत्तर: इस कथन के माध्यम से लेखक उन लोगों की मानसिकता को चुनौती दे रहे हैं जो योजना की व्यावहारिकता पर संदेह करते हैं और उसे अव्यावहारिक मानकर निष्क्रिय बैठे रहते हैं। लेखक प्रेरित कर रहे हैं कि केवल योजना पर विचार करने के बजाय, उसे श्रद्धा और कर्तव्य समझकर क्रियान्वित करने का संकल्प लिया जाए, क्योंकि दृढ़ निश्चय और कर्मठता से कोई भी लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।

2. प्रश्न: लेखक ने अच्छे उद्देश्यों पर निष्ठा रखने वालों की तुलना चोर, नशेबाज और गुण्डों से किस संदर्भ में की है और इससे वे क्या सिद्ध करना चाहते हैं?

उत्तर: लेखक ने यह तुलना इस संदर्भ में की है कि जब नकारात्मक प्रवृत्तियों वाले लोग अपने जैसे कई और साथी बना सकते हैं और अपने समूह का विस्तार कर सकते हैं, तो फिर उच्च उद्देश्यों पर सच्ची निष्ठा रखने वाले लोग अपने जैसे और लोगों को क्यों नहीं जोड़ सकते? इससे वे यह सिद्ध करना चाहते हैं कि यदि सृजनशील

लोग सच्ची लगन और उमंग से काम करें, तो वे भी अपने प्रभाव क्षेत्र का तेजी से विस्तार कर सकते हैं और एक बड़ा सकारात्मक आंदोलन खड़ा कर सकते हैं।

अध्याय 3: संजीवनी विद्या को व्यापक बनाया जाए

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, एक सामान्य व्यक्ति की दिनचर्या में कितने घंटे परमार्थ के लिए बच सकते हैं?
उत्तर: लेखक के अनुसार, आठ घंटे कमाने, सात घंटे सोने और पाँच घंटे अन्य कार्यों के बाद भी दिन में चार घंटे परमार्थ के लिए बच जाते हैं।
2. प्रश्न: समाज के कौन-कौन से वर्ग हैं जिनके पास पर्याप्त समय है और वे युग-धर्म में योगदान दे सकते हैं?
उत्तर: इन वर्गों में सरकारी पेंशनर, वे लोग जिनके बच्चे कमाने लायक हो गए हैं, जिनके पास पर्याप्त पैतृक संपत्ति है, साधु-ब्राह्मण वर्ग, और गृहकार्य से फुर्सत पाने वाली महिलाएँ शामिल हैं।
3. प्रश्न: लेखक ने अविवाहित या निःसंतान महिलाओं को "सौभाग्यवती" क्यों कहा है?
उत्तर: उन्हें सौभाग्यवती इसलिए कहा है क्योंकि वे बंदी-दासी जैसे जीवन की विवशता से बच गई हैं और उनके पास बच्चों का झंझट न होने के कारण युग-धर्म के निर्वाह के लिए अधिक समय और ऊर्जा होती है।
4. प्रश्न: आदर्शों के मार्ग में सबसे बड़ा अवरोध क्या है?
उत्तर: सबसे बड़ा अवरोध जन-जन पर छाई हुई कृपणता, निष्ठुरता और घिनौनी स्वार्थपरता है, जिसे लेखक ने 'शैतान' कहा है।
5. प्रश्न: प्राचीन काल में संजीवनी विद्या का ज्ञान लोगों तक कैसे पहुँचता था?
उत्तर: प्राचीन काल में सभी देवालय, गुरुकुल, आश्रम और तीर्थ इस कार्य में लगे रहते थे, जहाँ ऋषि-मनीषी हर आगंतुक को उनकी योग्यता के अनुसार शिक्षण देते थे, जिससे वे देवमानव के स्तर तक पहुँचते थे।
6. प्रश्न: सतयुग की वापसी कैसे संभव हो सकती है?
उत्तर: यदि प्राचीन काल की तरह आज भी लोकशिक्षण की प्रक्रिया को फिर से अपनाया जाने लगे, तो सतयुग की वापसी संभव है।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: लेखक ने "एक-एक मिलकर ग्यारह" होने का उदाहरण किस संदर्भ में दिया है और इसका क्या तात्पर्य है?
उत्तर: यह उदाहरण उन पति-पत्नियों के संदर्भ में दिया गया है जो बच्चे पैदा न करने का निर्णय लेते हैं। इसका तात्पर्य है कि यदि वे अपनी ऊर्जा बच्चों के पालन-पोषण में लगाने के बजाय एक-दूसरे को ऊँचा उठाने और

मिलकर युग-धर्म का निर्वाह करने में लगाएँ, तो वे सामान्य से ग्यारह गुना अधिक काम कर सकते हैं।

2. प्रश्न: वर्तमान समाज में महिलाओं की स्थिति और उनके योगदान की संभावनाओं पर लेखक ने क्या विचार प्रस्तुत किए हैं?

उत्तर: लेखक के अनुसार, कई महिलाएँ (जैसे गृहणियाँ, विधवाएँ, परित्यक्ताएँ, सम्पन्न परिवारों की महिलाएँ) अपना समय बेकार के कामों में बिताती हैं। यदि वे चाहें तो महिला उत्कर्ष के लिए बहुत कुछ कर सकती हैं। लेखक प्रजनन के भार को एक बड़ी समस्या मानते हैं और इससे बचकर महिलाओं को नारी-उत्कर्ष के कार्यों में जुटने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, जिससे वे समाज में एक क्रांति ला सकती हैं।

3. प्रश्न: "प्रश्न व्यस्तता, अभावग्रस्तता आदि का नहीं, वरन् एक ही है कि जन-जन पर कृपणता, निष्ठुरता, धिनौनी स्वार्थपरता के रूप में शैतान ही छाया है।" इस कथन की व्याख्या करें।

उत्तर: इस कथन का अर्थ है कि लोग जो समय या धन की कमी का बहाना बनाते हैं, वह असली कारण नहीं है। असली समस्या उनकी मानसिकता है, जो घोर स्वार्थ, कंजूसी और कठोरता से भरी हुई है। यही 'शैतानी' प्रवृत्ति उन्हें परमार्थ और सेवा के मार्ग पर चलने से रोकती है। यदि इस मानसिक बाधा को हटा दिया जाए, तो हर कोई युग-निर्माण में अपना योगदान दे सकता है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: प्राचीन शिक्षण संस्थानों (गुरुकुल, आश्रम, देवालय) और आज की परिस्थितियों में क्या मूलभूत अंतर आ गया है जिसके कारण संजीवनी विद्या का प्रवाह रुक गया है?

उत्तर: मूलभूत अंतर उद्देश्य और लोकरुचि का है। प्राचीन संस्थान लोक-शिक्षण और लोगों को देवमानव बनाने के केंद्र थे। आज उनका अस्तित्व लगभग समाप्त हो गया है और जो साधु-ब्राह्मण हैं, वे भी अपने शाश्वत कर्तव्यों से विमुख हो गए हैं। लोकरुचि भी धन कमाने और स्वार्थपूर्ति तक सिमट गई है, जिससे विद्या के इन केंद्रों को न तो कोई बनाने वाला है और न ही उनमें किसी की रुचि है।

2. प्रश्न: वर्तमान समय में, जब समाज विभिन्न वर्गों (पेंशनर, गृहणियाँ, अमीर, आदि) में बंटा है, उन सभी को संजीवनी विद्या के विस्तार के लिए एक साथ कैसे प्रेरित किया जा सकता है?

उत्तर: उन सभी को एक साथ प्रेरित करने के लिए सबसे पहले उनकी स्वार्थपरक मानसिकता को बदलना होगा। उन्हें यह समझाना होगा कि व्यक्तिगत सुख और सामाजिक प्रगति एक-दूसरे से जुड़े हैं। प्रत्येक वर्ग को उनकी विशिष्ट स्थिति के अनुसार यह बोध कराना होगा कि वे अपने खाली समय और संसाधनों का उपयोग करके युग-धर्म की चुनौती स्वीकार कर सकते हैं। इसके लिए ऐसे आयोजनों और समारोहों की व्यवस्था करनी होगी जो उन्हें आकर्षित कर सकें और प्रशिक्षित कर सकें, जैसा कि शांतिकुंज ने करने का निश्चय किया है।

अध्याय 4: महाविद्या का उदय और अभ्युदय

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: विद्या की तुलना किन-किन चीजों से की गई है?

उत्तर: विद्या की तुलना अग्नि की ऊर्जा, सुगंध, गंगा की जलधारा, मलयानिल (सुगंधित हवा) और सूर्य के प्रकाश से की गई है, जो अपने प्रभाव को दूर-दूर तक फैलाते हैं।

2. प्रश्न: इक्कीसवीं सदी की संरचना किस आधार पर होने जा रही है?

उत्तर: इक्कीसवीं सदी के उज्ज्वल भविष्य की संरचना 'प्रज्ञायुग का अवतरण' के आधार पर होने जा रही है, जिसे विचारक्रांति या ज्ञानयज्ञ भी कहा गया है।

3. प्रश्न: वर्तमान शिक्षा प्रणाली के प्रति लोगों में क्षोभ क्यों बढ़ता जा रहा है?

उत्तर: क्षोभ इसलिए बढ़ रहा है क्योंकि यह प्रणाली केवल उदरपूर्ति और नौकरी पाने तक सीमित है। जो छात्र नौकरी पाने में असफल रहते हैं, वे निराशा और खीझ में भरकर अनुचित राह पकड़ लेते हैं, जिससे इस प्रणाली की अपूर्णता स्पष्ट होती है।

4. प्रश्न: विद्या और साक्षरता में क्या संबंध है?

उत्तर: शिक्षा के लिए साक्षरता अनिवार्य है, किन्तु विद्या के साथ जुड़ी आदर्शवादी उत्कृष्टता को हृदयंगम करने के लिए साक्षरता अनिवार्य नहीं है। विद्या सीधे अंतःकरण में उतर जाती है, जिसमें निरक्षरता भी बाधक नहीं होती।

5. प्रश्न: विद्या के क्या-क्या लाभ बताए गए हैं?

उत्तर: विद्या से विवेक उभरता है, व्यक्तित्व परिष्कृत होता है, प्रतिभा निखरती है और शालीनता इतनी ऊँची उठ जाती है कि सामान्य मनुष्य भी देवमानव बन सकता है।

6. प्रश्न: "विद्ययामृतमश्नुते" और "सा विद्या या विमुक्तये" का क्या अर्थ है?

उत्तर: "विद्ययामृतमश्नुते" का अर्थ है 'विद्या से अमरत्व मिलता है' और "सा विद्या या विमुक्तये" का अर्थ है 'वही विद्या है जो मुक्ति दिलाए'।

7. प्रश्न: संजीवनी विद्या को और क्या कहा जाता है?

उत्तर: संजीवनी विद्या को 'जीवन जीने की कला' भी कहा जाता है।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: लेखक ने आज के समय की दुर्गति का मूल कारण क्या बताया है और उसका समाधान कैसे संभव है?

उत्तर: दुर्गति का मूल कारण मान्यताओं, भावनाओं और आदतों में अनौचित्य का समावेश हो जाना है, जिसकी तुलना गंदगी की सड़न से की गई है। इसका समाधान दोहरा है: पहले इस गंदगी (अनौचित्य) को बुहारना

होगा, और फिर उस स्थान पर सकारात्मक गुणों (औचित्य) की स्थापना करनी होगी। यह दोनों कार्य केवल विद्या-विस्तार से ही संभव हैं।

2. प्रश्न: आज का औसत आदमी विद्या के परोक्ष लाभों (आत्मसंतोष, लोकसम्मान) की ओर ध्यान क्यों नहीं देता?

उत्तर: औसत आदमी इसलिए ध्यान नहीं देता क्योंकि आज के समय में 'पैसा ही परमेश्वर' बन गया है और अहंकार का नशा छाया हुआ है। लोग केवल वासना, तृष्णा और अहंता की पूर्ति में लगे हैं और उन्हें आत्मज्ञान या जीवन-मुक्ति जैसे उच्च आदर्शों के बारे में न तो पता है और न ही उन्हें पाने की इच्छा है।

3. प्रश्न: ६०० करोड़ मनुष्यों के उल्टी दिशा में चल रहे प्रवाह को बदलने का कार्य केवल मानवीय प्रयत्नों से क्यों संभव नहीं है? इसमें किसकी भूमिका महत्वपूर्ण होगी?

उत्तर: यह कार्य केवल मानवीय प्रयत्नों से इसलिए संभव नहीं है क्योंकि समस्या बहुत विशाल है और लगभग सभी मनुष्यों का चिंतन निकृष्ट और चरित्र भ्रष्ट हो चुका है। इतने बड़े प्रवाह को उलटने का कार्य केवल नियंता की नियति (ईश्वरीय शक्ति) ही कर सकती है, भले ही इस कार्य को पूरा करने का श्रेय कुछ मनुष्यों को मिल जाए।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: "यहाँ विद्या शब्द का सही अर्थ भी समझना होगा। वह साक्षरता तक सीमित नहीं है। वरन् दूरदर्शी विवेकशीलता और ममतामयी भाव-संवेदना के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ती है।" इस कथन की विस्तृत व्याख्या करें।

उत्तर: इस कथन का अर्थ है कि 'विद्या' केवल जानकारी या अक्षर ज्ञान नहीं है। इसका वास्तविक स्वरूप बहुत गहरा है। इसमें तीन तत्व शामिल हैं: पहला, दूरदर्शी विवेकशीलता, यानी सही और गलत के बीच अंतर करने और भविष्य के परिणामों को समझने की क्षमता। दूसरा, ममतामयी भाव-संवेदना, यानी दूसरों के प्रति करुणा, प्रेम और सहानुभूति का भाव। तीसरा, यह दोनों गुण अविच्छिन्न रूप से, यानी हमेशा एक साथ जुड़े रहते हैं। सच्ची विद्या व्यक्ति को ज्ञानी बनाने के साथ-साथ संवेदनशील और विवेकशील भी बनाती है, जो वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नहीं मिलता।

2. प्रश्न: क्या आज की भौतिकवादी दुनिया में "विद्या ददाति विनयम्" (विद्या विनय देती है) का सिद्धांत प्रासंगिक है? स्रोत के आधार पर तर्क दें।

उत्तर: स्रोत के अनुसार, यह सिद्धांत आज भी प्रासंगिक है, लेकिन इसकी उपेक्षा हो रही है। आज की शिक्षा प्रणाली जानकारी तो देती है, पर विनय नहीं, क्योंकि उसका उद्देश्य अहंकार की पूर्ति (पद, पैसा) है। जबकि सच्ची विद्या, जैसा कि स्रोत में बताया गया है, शालीनता को उस ऊँचाई तक ले जाती है जिसे देवमानव की

संज्ञा दी जा सके। यह विनम्रता और शालीनता ही विद्या का सार है। इसलिए, यद्यपि आज का समाज पैसे और अहंकार को महत्व देता है, लेकिन स्थायी सुख-शांति और प्रगति के लिए "विद्या ददाति विनयम्" का सिद्धांत अनिवार्य और अत्यंत प्रासंगिक है।

अध्याय 5: जले दीपक ही बुझों को जलाएँगे सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: पौराणिक कथा के अनुसार महाप्रलय के बाद सृष्टि का आरंभ कैसे हुआ?

उत्तर: कथा के अनुसार, महाप्रलय के बाद सर्वत्र खारे पानी के बीच एक हजार पंखुड़ियों वाला कमल खिला, जिस पर ब्रह्मा जी उत्पन्न हुए। उन्होंने वेदज्ञान से सृष्टि को गुंजित किया, जिससे चेतन सृष्टि का निर्माण हुआ।

2. प्रश्न: इक्कीसवीं सदी की शुरुआत के बुलबुले कहाँ से उभरने की बात कही गई है?

उत्तर: ये बुलबुले शान्तिकुञ्ज की जमीन को फोड़कर उभरने और उबलने की बात कही गई है, जिसके अगले दिनों में एक बड़े झरने का रूप लेने की संभावना है।

3. प्रश्न: लेखक के अनुसार मनुष्य की सामर्थ्य कैसी है?

उत्तर: मनुष्य स्वल्प है, उसकी सामर्थ्य, सूझ-बूझ, प्रयत्नशीलता और सफलता, सभी सीमित स्तर की हैं।

4. प्रश्न: युगसन्धि महापुरश्चरण कहाँ और कब से चल रहा है?

उत्तर: युगसन्धि महापुरश्चरण शान्तिकुञ्ज में पिछले दो वर्षों से चल रहा है (पुस्तक लेखन के समय के अनुसार)।

5. प्रश्न: युगशिल्पियों के प्रशिक्षण की प्रक्रिया क्यों तेज की गई?

उत्तर: धीमी गति से चल रहे प्रयासों को रॉकेट जैसी तेजी देने के लिए और सन् २००० तक के आगामी वर्षों में कार्यों को पूरा करने के लिए यह प्रक्रिया तेज की गई।

6. प्रश्न: किसी विद्यालय में इमारतों और फर्नीचर से भी अधिक महत्वपूर्ण क्या है?

उत्तर: सबसे अधिक महत्वपूर्ण सुयोग्य अध्यापकों का चयन और उनमें अपने काम को पूरा करने की निरंतर ललक का होना है।

7. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज में प्राण-चेतना प्रदान करने के लिए प्रशिक्षण सत्रों की अवधि कितनी रखी गई है और क्यों?

उत्तर: अधिक लोगों को कम समय में प्रशिक्षित करने के लिए अवधि को न्यूनतम पाँच-पाँच दिन का कर दिया गया है।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: लेखक ने "जले दीपक ही बुझों को जलाएँगे" शीर्षक का प्रयोग किस संदर्भ में किया है?

उत्तर: इस शीर्षक का प्रयोग इस संदर्भ में किया गया है कि पहले स्वयं को ज्ञान और प्राण-चेतना से प्रज्वलित करना होगा, तभी दूसरों में नवचेतना का संचार किया जा सकेगा। इसके लिए शान्तिकुञ्ज में युगशिल्पियों के प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है, ताकि वे स्वयं जलते हुए दीपक बनकर समाज के बुझे हुए दीपकों को जला सकें, अर्थात् लोगों को जाग्रत कर सकें।

2. प्रश्न: लेखक मानवीय प्रयत्नों की सीमाओं के बावजूद बड़े परिवर्तनों की आशा क्यों करते हैं?

उत्तर: लेखक का मानना है कि यद्यपि मनुष्य की सामर्थ्य सीमित है, लेकिन ईश्वरीय शक्ति (भगवान) असंभव को भी संभव कर सकती है। जैसे अवतारों ने मनुष्य शरीर में अलौकिक कार्य किए, वैसे ही ईश्वर आज भी मनुष्यों को माध्यम बनाकर बड़े परिवर्तन ला सकता है। छोटे आरंभ भी, जैसे बुद्ध और गाँधी के आंदोलन, समय आने पर महान रूप ले लेते हैं।

3. प्रश्न: "गुरु गृह पढ़न गए रघुराई। अल्पकाल विद्या सब आई॥" - इस उक्ति का शान्तिकुञ्ज के प्रशिक्षण सत्रों से क्या संबंध है?

उत्तर: इस उक्ति का संबंध यह है कि यदि सिखाने वाले (गुरु) और सीखने वाले (शिष्य) दोनों ही दमदार या योग्य हों, तो कम समय में भी सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। शान्तिकुञ्ज के पाँच दिवसीय सत्रों में इसी सिद्धांत को अपनाया गया है, जहाँ प्राण-प्रत्यावर्तन के माध्यम से कम अवधि में भी गहरा शिक्षण संभव माना गया है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: पौराणिक मिथकों (जैसे प्रलय के बाद कमल खिलना, अगस्त्य का समुद्र पीना) का उल्लेख करके लेखक वर्तमान समय के लिए क्या संदेश देना चाहते हैं?

उत्तर: इन मिथकों के माध्यम से लेखक यह संदेश देना चाहते हैं कि हमें वर्तमान की निराशाजनक परिस्थितियों को देखकर हार नहीं माननी चाहिए। जिस प्रकार असंभव लगने वाली पौराणिक घटनाएँ ईश्वरीय शक्ति से संभव हुईं, उसी प्रकार आज की कठिन परिस्थितियों को बदलने का दैवीय संकल्प भी असंभव दिखने वाले चमत्कार कर सकता है। शान्तिकुञ्ज का छोटा-सा प्रयास भी उसी ईश्वरीय योजना का हिस्सा है, जो एक दिन विशाल वटवृक्ष का रूप ले सकता है।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार, युग-परिवर्तन जैसे विशाल कार्य के लिए मानवीय और दैवीय शक्तियों के बीच क्या संबंध है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, युग-परिवर्तन का कार्य इतना विशाल है कि यह केवल मानवीय प्रयासों से संभव नहीं है। इसके लिए दैवीय शक्ति या नियंता की नियति की आवश्यकता होती है। हालाँकि, यह दैवीय शक्ति स्वयं कार्य नहीं करती, बल्कि वह मनुष्यों में से ही कुछ पात्रों (जैसे हनुमान, अर्जुन, गाँधी) का चयन करती है

और उन्हें अपनी शक्ति का माध्यम बनाकर अलौकिक कार्य सम्पन्न कराती है। इस प्रकार, मनुष्य केवल निमित्त मात्र बनता है और श्रेय प्राप्त करता है, जबकि मूल शक्ति दैवीय ही होती है।

अध्याय 6: मूर्च्छना का पुनर्जागरण अनिवार्य है

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: प्राचीन काल में गाँव-गाँव में देवालयों की क्या भूमिका थी?

उत्तर: देवालयों को पुरोधा संभालते थे और वे कथा-वार्ता एवं पर्व-संस्कारों के माध्यम से लोगों के मानस की विकृतियों को सुधारते थे और उनमें सदाशयता के बीज बोते थे।

2. प्रश्न: प्राचीन भारत की शिक्षा व्यवस्था में गुरुकुल और आश्रमों का क्या कार्य था?

उत्तर: गुरुकुलों में छात्रों को उच्चस्तरीय शिक्षा के साथ भोजन-वस्त्र की भी व्यवस्था मिलती थी। आश्रम-आरण्यकों में अध्यापकों, मनीषियों और वानप्रस्थों की शिक्षा होती थी।

3. प्रश्न: तक्षशिला और नालन्दा विश्वविद्यालय के मनीषियों ने विश्व में क्या योगदान दिया?

उत्तर: तक्षशिला के कुमारजीव जैसे मनीषियों ने चीन, जापान, कोरिया आदि देशों में नवजीवन का संचार किया। नालन्दा के कौण्डिल्य ने तिब्बत, वर्मा, मलेशिया, इंडोनेशिया आदि को देव संस्कृति का केंद्र बनाया।

4. प्रश्न: आज के समय में प्राचीन विद्यातंत्र का तिरस्कार क्यों हो गया है?

उत्तर: इसका कारण यह है कि लोगों की रुचि सद्ज्ञान से हटकर केवल नौकरी और व्यवसाय से धन कमाने पर केंद्रित हो गई है। अध्यापक और छात्र दोनों ही उदरपूर्ति से संबंधित शिक्षा में लगे हैं।

5. प्रश्न: टैगोर के गीत "एकला चलो रे" का उल्लेख लेखक ने क्यों किया है?

उत्तर: लेखक ने इसका उल्लेख यह कहने के लिए किया है कि जब नव-जागरण के लिए कोई आगे नहीं आ रहा हो, तब निराशा में डूबने के बजाय अकेले ही अपने लक्ष्य की ओर चल पड़ना चाहिए।

6. प्रश्न: "सत्य में हजार हाथी के बराबर बल होता है।" इस कथन का क्या आशय है?

उत्तर: इसका आशय है कि सत्य और संकल्प में अपार शक्ति होती है। इसी शक्ति के बल पर एकाकी प्रयास भी विशाल परिणाम ला सकते हैं, जैसे ब्रह्मा ने संकल्प बल से सृष्टि रच दी थी।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: युग-परिवर्तन के लिए लेखक किस प्रकार के प्रशिक्षकों की आवश्यकता बताते हैं?

उत्तर: लेखक को ऐसे प्रशिक्षकों की आवश्यकता है जो केवल प्रवचन या जानकारी न दें, बल्कि अपनी प्राण-प्रतिभा का प्रयोग करके लोगों की उल्टी मान्यताओं को बलपूर्वक सीधा कर सकें। वे उन लोगों को भी समझा सकें जो अपनी गलती को ही सही मानने का दुराग्रह करते हैं।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार, वर्तमान समय में दान-पुण्य की परिधि क्यों और कैसे सिकुड़ गई है?

उत्तर: दान-पुण्य की परिधि इसलिए सिकुड़ गई है क्योंकि लोगों की सोच स्वार्थपूर्ण हो गई है। वे केवल नाम कमाने के लिए मुफ्त दवाखाना या प्याऊ खुलवाने जैसे छोटे काम करते हैं। वे यह नहीं सोचते कि विश्व को ऐसे क्रांति-मनीषियों की भी जरूरत है जो समाज की उल्टी चाल को सीधा कर सकें, क्योंकि इस दूर की बात सोचने में उनका कोई तात्कालिक स्वार्थ नहीं है।

3. प्रश्न: लेखक ने ऋषि-परम्परा की 'मूर्च्छा' और लक्ष्मण की 'मूर्च्छा' में क्या समानता बताई है?

उत्तर: लेखक ने यह समानता बताई है कि जैसे लक्ष्मण की मूर्च्छा संजीवनी बूटी से टूटी थी और वे पुनर्जीवित हुए थे, उसी प्रकार आज ऋषि-परम्परा भी मूर्च्छित अवस्था में है, लेकिन उसके भी पुनरुत्थान की आशा है। मानवीय गरिमा को पुनर्जीवित करने का संकल्प उस संजीवनी की तरह है, जिससे यह मूर्च्छित परम्परा भी फिर से जागृत और तनकर खड़ी हो सकती है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: प्राचीन भारतीय शिक्षा-तंत्र और वर्तमान शिक्षा-तंत्र की तुलना करते हुए बताइए कि समाज पर उनके प्रभावों में क्या मौलिक अंतर है?

उत्तर: प्राचीन शिक्षा-तंत्र (देवालय, गुरुकुल, आश्रम) का उद्देश्य दोहरा था: **आजीविका के लिए शिक्षा और जीवन-निर्माण के लिए विद्या**। यह तंत्र व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करता था और समाज में सदाशयता फैलाता था। इसके विपरीत, वर्तमान शिक्षा-तंत्र पूरी तरह **उदरपूर्ति और धन कमाने पर केंद्रित** है। इसका परिणाम यह है कि समाज में सद्ज्ञान का अभाव हो गया है, लोगों की रुचि स्वार्थपरक हो गई है, और नैतिक मूल्यों का पतन हुआ है।

2. प्रश्न: "जब समूचा प्रवाह ही स्वार्थ-साधन के लिए समर्पित है तो मनीषा और सम्पन्नता को ही क्या बन पड़ी है जो लोकहित की बात सोचें?" इस कथन के आलोक में आज के बुद्धिजीवियों और सम्पन्न वर्ग की सामाजिक भूमिका का आलोचनात्मक विश्लेषण करें।

उत्तर: यह कथन आज के बुद्धिजीवियों (मनीषा) और सम्पन्न वर्ग की सामाजिक उदासीनता पर एक तीखा व्यंग्य है। स्रोत के अनुसार, ये दोनों वर्ग भी समाज के स्वार्थपरक प्रवाह में बह रहे हैं। उनकी बुद्धि और संपत्ति का उपयोग लोकहित या समाज के नैतिक उत्थान के लिए नहीं हो रहा है, बल्कि व्यक्तिगत लाभ और स्वार्थ-साधन तक सीमित है। वे समाज की अनिवार्य आवश्यकताओं, जैसे कि नैतिक मार्गदर्शन और मूल्यों की स्थापना, की अनदेखी कर रहे हैं। इस प्रकार, जिनके पास समाज को दिशा देने की सबसे अधिक क्षमता है, वही अपनी जिम्मेदारी से विमुख हो गए हैं, जिससे समस्या और भी जटिल हो गई है।

अध्याय 7: लोकमानस-परिष्कार का प्रशिक्षण

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज की व्यय-व्यवस्था कैसे चलती है?

उत्तर: शान्तिकुञ्ज की व्यय-व्यवस्था प्रेमी-परिजनों द्वारा प्रतिदिन दिए जाने वाले दस पैसे जैसे छोटे अंशदान और एक घंटे के समयदान से चलती है।

2. प्रश्न: प्राचीन काल में सद्ज्ञान-प्रकाश के देवता 'सविता' के रथ को कौन से सात अश्व खींचते थे?

उत्तर: इस रथ को ऋषि, मनीषी, तपस्वी, साधु, ब्राह्मण, वानप्रस्थ और परिव्राजक रूपी सात अश्व खींचते थे।

3. प्रश्न: लेखक ने अपनी जीवन भर की संचित पूँजी किसे माना है?

उत्तर: लेखक ने लगभग पचास वर्षों में बने 'अखण्ड ज्योति' के पाँच लाख स्थायी और पच्चीस लाख अस्थायी परिजनों के विचार-परिवार को अपनी संचित पूँजी माना है।

4. प्रश्न: वसन्त, १९९० से शान्तिकुञ्ज में कौन-से तीन प्रमुख प्रशिक्षण एक साथ चलाए गए?

उत्तर: तीन प्रशिक्षण थे: (१) लोकमानस के परिष्कार का आंदोलन, (२) महिला जागरण, और (३) प्राण-चेतना के उद्दीपन हेतु साधनात्मक अन्वेषण।

5. प्रश्न: पाँच लाख स्थायी पाठकों को प्रशिक्षित करने की क्या योजना बनाई गई?

उत्तर: योजना यह थी कि हर साल एक लाख परिजनों को प्रशिक्षित किया जाए, ताकि पाँच साल में सभी पाँच लाख लोगों को प्रशिक्षित किया जा सके।

6. प्रश्न: लेखक ने विवेकानन्द, दयानन्द जैसे विरक्तों के अभाव में आपत्तिकालीन आवश्यकता को पूरा करने का क्या विकल्प सोचा है?

उत्तर: उन्होंने सोचा है कि अब सद्गृहस्थों के माध्यम से ही इस आपत्तिकालीन आवश्यकता को पूरा किया जा सकेगा, क्योंकि अन्य कोई विकल्प नहीं है।

7. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज के प्रशिक्षण सत्रों में किन लोगों को प्रवेश नहीं दिया जाएगा?

उत्तर: अशिक्षित, वयोवृद्ध, रोगी, बालक, अनगढ़ और जो केवल सैर-सपाटे के लिए आते हैं, उन्हें प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: "विकृतियाँ मात्र विपत्ति ही नहीं लातीं, वे उनके समाधान के उपायों को भी झुठलाती और उधर ध्यान देने वालों को भी बरगलाती हैं।" इस कथन का क्या अर्थ है?

उत्तर: इसका अर्थ है कि सामाजिक-मानसिक विकृतियाँ एक दोहरी समस्या पैदा करती हैं। एक तो वे स्वयं विपत्ति का कारण बनती हैं, और दूसरा, वे लोगों की सोच को इतना बिगाड़ देती हैं कि वे समाधान के सही

उपायों को भी गलत मानने लगते हैं या उनकी ओर ध्यान ही नहीं देते। जो लोग समाधान का प्रयास करते हैं, उन्हें भी ये विकृतियाँ गुमराह कर देती हैं, जिससे समस्या और भी जटिल हो जाती है।

2. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज ने अपने "विचार परिवार" को युगदेवता के चरणों में अर्पित करने का निश्चय क्यों किया?

उत्तर: क्योंकि लेखक इस विचार परिवार को अपनी सबसे महत्वपूर्ण और सशक्त पूँजी मानते हैं, जो वंश-परम्परा से भी बढ़कर है। जिस प्रकार दशरथ ने अपने पुत्रों को और गुरु गोविंद सिंह ने अपने पंच प्यारों को श्रेष्ठ कार्य के लिए समर्पित किया था, उसी प्रकार शान्तिकुञ्ज भी अपने श्रद्धावान परिजनों को नवसृजन के महान कार्य में लगाकर एक अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करना चाहता है।

3. प्रश्न: "एक से पाँच बनने-बनाने का आन्दोलन" क्या है और इसका अंतिम लक्ष्य क्या है?

उत्तर: यह एक विस्तारवादी आंदोलन है, जिसमें प्रत्येक प्रशिक्षित व्यक्ति अपने जैसे पाँच और नए सृजन-शिल्पी तैयार करेगा। इसका लक्ष्य इस गुणन-प्रक्रिया को निरंतर जारी रखना है, जिससे २५ लाख लोग सवा करोड़ और फिर सवा छः करोड़ हो जाएँ। इसका अंतिम लक्ष्य इतने सृजन-शिल्पी तैयार करना है जो लोकमानस को परिष्कृत कर सकें, समाज की अवांछनीयताओं को उलट सकें और इस पृथ्वी को स्वर्ग बना सकें।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: स्रोत में आज के तथाकथित संतों और प्राचीन ऋषियों की भूमिका में क्या मौलिक अंतर बताया गया है? समाज पर इसका क्या प्रभाव पड़ा है?

उत्तर: स्रोत के अनुसार, प्राचीन ऋषि-मनीषी समाज में ज्ञान का प्रकाश फैलाते थे और लोगों का नैतिक उत्थान करते थे। वे 'सविता' के रथ के अश्व बनकर ज्ञान को विश्व के कोने-कोने तक पहुँचाते थे। इसके विपरीत, आज के तथाकथित संत लोगों की सांसारिक मनोकामनाएँ पूरी करने के लिए देवताओं के एजेंट बन गए हैं। वे ज्ञान देने के बजाय अंधविश्वास और स्वार्थ को बढ़ावा देते हैं। इसका प्रभाव यह हुआ है कि समाज में ज्ञान का प्रकाश क्षीण हो गया है, विकृतियाँ बढ़ गई हैं और नैतिक पतन हुआ है।

2. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज की कार्यप्रणाली (जैसे छोटे-छोटे दान से संचालन, सद्गृहस्थों पर निर्भरता) को देखते हुए, क्या यह मॉडल आज के युग में बड़े सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए व्यावहारिक है? स्रोत के आधार पर तर्क दें।

उत्तर: स्रोत के अनुसार, यह मॉडल पूरी तरह व्यावहारिक है। लेखक का तर्क है कि भले ही यह सामर्थ्य में स्वल्प लगे, लेकिन सत्कर्मों का भी दुष्कर्मों की तरह अनुकरण होता है। जैसे दीवाली पर छोटे-छोटे दीपक मिलकर अमावस्या के अंधकार को मिटा देते हैं, वैसे ही सामान्य लोगों के छोटे-छोटे योगदान मिलकर भी एक बड़ा आंदोलन खड़ा कर सकते हैं। विवेकानन्द, गाँधी जैसे महापुरुष भी अकेले ही चले थे। अतः, बड़े धनाध्यक्षों

या सरकारी सहायता के बिना, केवल श्रद्धावान सदगृहस्थों के सामूहिक संकल्प और छोटे-छोटे योगदान के बल पर भी बड़े सामाजिक परिवर्तन लाना संभव है।

अध्याय 8: पंच दिवसीय साधना का स्थूल और सूक्ष्म स्वरूप

सरल स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: मानवीय चेतना कितने शरीर धारण करती है और उनके नाम क्या हैं?

उत्तर: मानवीय चेतना तीन शरीर धारण करती है: स्थूल, सूक्ष्म और कारण।

2. प्रश्न: सामान्य उपदेशों का लोगों पर स्थायी प्रभाव क्यों नहीं पड़ता?

उत्तर: क्योंकि वे केवल बैखरी वाणी (जीभ से निकलने वाली) से दिए जाते हैं, जो कानों से सुनकर मस्तिष्क तक जानकारी पहुँचाने का काम करती है। यह अंतरात्मा की गहराई में प्रवेश नहीं कर पाती।

3. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज के पाँच दिवसीय सत्रों में दिए गए उपदेश अधिक प्रभावशाली क्यों होते हैं?

उत्तर: क्योंकि वे केवल बैखरी वाणी नहीं होते, बल्कि उनके साथ सूक्ष्म परिकर की मध्यमा और कारण क्षेत्र की परावाणी का प्रभाव भी जुड़ा होता है। यह ऊर्जावान वाणी व्यक्ति के अंतर्मन को झकझोरती है और उसे जीवन में आदर्श उतारने के लिए विवश करती है।

4. प्रश्न: तप का स्वरूप क्या है?

उत्तर: तप का स्वरूप ऊर्जा है। जैसे ताप से धातु पिघलकर औजार बनती है और मिट्टी पककर मजबूत बर्तन, वैसे ही तप की ऊर्जा से व्यक्ति का परिष्कार होता है।

5. प्रश्न: आत्मिक प्रगति में सबसे बड़ी अड़चन क्या है और उसे कैसे हटाया जा सकता है?

उत्तर: सबसे बड़ी अड़चन पूर्व-संचित दुष्कर्म हैं, जिन्हें प्रायश्चित के बिना हटाया नहीं जा सकता।

6. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज के वातावरण को अनुदान या अतिरिक्त लाभ देने वाला क्यों माना गया है?

उत्तर: क्योंकि वहाँ गंगातट, हिमालय की छाया और सप्त-ऋषियों की तपश्चर्या के विशिष्ट संस्कार हैं। साथ ही, वहाँ के वातावरण में ऐसे अदृश्य तत्व बरसते रहते हैं जो साधकों को अतिरिक्त लाभ पहुँचाते हैं, जैसे स्वाति वर्षा से सीप में मोती बनता है।

7. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज के सूत्र-संचालक ऋषि-युग्म ने भविष्य के लिए क्या वचन दिया है?

उत्तर: उन्होंने वचन दिया है कि शरीर न रहने पर भी वे इस पुण्यभूमि में अपना अस्तित्व बनाए रखेंगे और उनकी उग्र साधना का लाभ उन सभी परिजनों को मिलता रहेगा जो नवसृजन के लिए अपना समयदान और अंशदान देते रहेंगे।

कठिन स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: तपस्वी किसे कहते हैं? तप के दो प्रमुख पक्ष कौन-कौन से हैं?

उत्तर: जो व्यक्ति दो प्रयोजनों को उत्साहपूर्वक अपना लेता है, उसे तपस्वी कहते हैं। तप का पहला पक्ष है- आदर्शों के पालन के लिए संयम बरतना और उससे होने वाले घाटे को सहना। दूसरा पक्ष है- सत्प्रवृत्तियों को बढ़ाने के लिए श्रेष्ठता को अपनाने में परिश्रम करना और प्रसन्नता से घाटा उठाना।

2. प्रश्न: प्रायश्चित्त-प्रक्रिया क्या है? प्रतीकात्मक प्रायश्चित्त के अलावा साधक से और क्या अपेक्षा की जाती है?

उत्तर: प्रायश्चित्त-प्रक्रिया का अर्थ है, अपने द्वारा किए गए पापों या खोदी गई खाई को पुण्यकर्मों की मिट्टी डालकर समतल करना। प्रतीकात्मक प्रायश्चित्त के अलावा साधक से यह भी अपेक्षा की जाती है कि वह नए सिरे से ऐसे पुण्यकर्मों का आयोजन करे, जिससे उसकी पुरानी दुष्प्रवृत्तियाँ दब सकें और स्थिति सुधर सके।

3. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज को पारस, अमृत और कल्पवृक्ष क्यों कहा गया है?

उत्तर: यह तुलना इसलिए की गई है क्योंकि जिस प्रकार पारस के स्पर्श से लोहा सोना बन जाता है, अमृत से जीवन मिलता है और कल्पवृक्ष से इच्छाएँ पूरी होती हैं, उसी प्रकार शान्तिकुञ्ज का संपर्क और सान्निध्य भी साधक को निहाल कर देता है। वहाँ की जलवायु और वातावरण एक सेनेटोरियम की तरह है जो रुग्णता और दुर्बलता को भगाकर साधक का कायाकल्प कर देता है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न:

1. प्रश्न: वाणी के तीन स्तरों - बैखरी, मध्यमा और परा - का क्या महत्व है और ये व्यक्ति के रूपांतरण में कैसे भूमिका निभाते हैं?

उत्तर: वाणी के ये तीन स्तर प्रभाव की गहराई को दर्शाते हैं। बैखरी केवल स्थूल शरीर (जीभ, कान) तक सीमित है और सूचना का आदान-प्रदान करती है। मध्यमा सूक्ष्म शरीर से संबंधित है और विचारों व भावनाओं को प्रभावित करती है। परा कारण शरीर से निकलती है, यह प्राण-चेतना से युक्त होती है और सीधे आत्मा को स्पर्श करती है। शान्तिकुञ्ज के सत्रों में तीनों वाणियों का प्रयोग होता है, जिससे संदेश केवल जानकारी बनकर नहीं रह जाता, बल्कि एक इंजेक्शन की तरह व्यक्ति के अंतःकरण में उतरकर उसके जीवन-क्रम को बदलने वाली आदर्शवादी उमंगें पैदा करता है। यही व्यक्ति के वास्तविक रूपांतरण का आधार है।

2. प्रश्न: 'साधना से सिद्धि' का सिद्धांत किन-किन घटकों पर निर्भर करता है? शान्तिकुञ्ज के पंच दिवसीय सत्र में इन सभी घटकों का समावेश कैसे किया गया है?

उत्तर: 'साधना से सिद्धि' का सिद्धांत कई घटकों पर निर्भर करता है:

- तपश्चर्या: मन और शरीर को संयम और श्रेष्ठ कर्मों के लिए साधना।
- प्रायश्चित्त: पूर्व के दुष्कर्मों का निवारण करना ताकि चित्त शुद्ध हो सके।

◦ **अनुदान:** गुरु या पवित्र वातावरण से मिलने वाली बाहरी कृपा या ऊर्जा।

3. शान्तिकुञ्ज के सत्र में इन सभी का समावेश है। वहाँ **विविध साधनाओं** के माध्यम से तपश्चर्या कराई जाती है। **प्रतीकात्मक और वास्तविक पुण्यकर्मों** द्वारा प्रायश्चित का विधान है। और अंत में, सप्तऋषियों की तपोभूमि, ऋषि-युग्म की प्राण-चेतना और सात्विक आहार के रूप में **दिव्य वातावरण का अनुदान** साधक को सहज ही प्राप्त होता है। इन सभी के अग्नित्त प्रभाव से सिद्धि का मार्ग प्रशस्त होता है।

शब्द/शब्द समुच्चय - परिभाषा

- **विद्या या मेधा** - यह वह ज्ञान है जो व्यक्ति को हर समस्या का निराकरण करने में स्वयं सक्षम बनाता है। यह साक्षरता तक सीमित नहीं है, बल्कि दूरदर्शी विवेकशीलता और ममतामयी भाव-संवेदना के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ी होती है। मनुष्य के गुण, कर्म, स्वभाव में उत्कृष्ट आदर्शवादिता का समावेश कर सकने वाली शक्ति ही विद्या है।
- **संजीवनी विद्या** - यह मूर्च्छा से उबारने हेतु ऋषियों द्वारा प्रणीत एक प्रयोग है। इसे 'जीवन जीने की कला' भी कहा जाता है, जिसके साथ सुख-शांति और प्रगति के सभी सूक्ष्म तंतु जुड़े हुए माने जाते हैं।
- **युग-शिक्षण** - यह व्यक्तित्व के समग्र विकास, समाज-संरचना के नवनिर्धारण, अर्थ-व्यवस्था, सुलभ आजीविका, शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य तथा व्यवहार में शालीनता का समावेश जैसे विषयों की शिक्षा है। इसका स्वरूप वर्तमान शिक्षा तंत्र की अपेक्षा कहीं अधिक व्यापक और वजनदार है।
- **झोला पुस्तकालय योजना** - यह एक योजना है जिसके अंतर्गत युग-शिल्पी अपने परिचय क्षेत्र में शिक्षितों से संपर्क करके युग साहित्य को बिना किसी मूल्य के घर पर पहुँचाते हैं और पढ़ लेने पर वापस ले लेते हैं।
- **तपस्वी** - वह व्यक्ति जो दो प्रयोजनों को उत्साहपूर्वक अपना लेता है: पहला, आदर्शों के पालन के लिए संयम बरतना और उससे होने वाले घाटे को सहना; तथा दूसरा, सत्प्रवृत्तियों को बढ़ाने के लिए श्रेष्ठता को अपनाने में परिश्रम करना और प्रसन्नता से घाटा उठाना।
- **तितीक्षा** - शरीर और मन को कष्ट सहने के लिए अभ्यस्त बना लेना ही तितीक्षा है। इसके अभ्यास से तपश्चर्या सरल बन जाती है।
- **तप** - यह ऊर्जा का स्वरूप है। जैसे ताप से धातु पिघलकर औजार बनती है, वैसे ही तप की ऊर्जा से व्यक्ति का परिष्कार होता है।
- **प्रायश्चित-प्रक्रिया** - यह अपने द्वारा किए गए पापों या खोदी गई खाई को पुण्यकर्मों की मिट्टी डालकर समतल करने की प्रक्रिया है।
- **विचार-परिवार** - यह 'अखण्ड ज्योति' और उसकी सहेली पत्रिकाओं के माध्यम से शान्तिकुञ्ज तंत्र के इर्द-गिर्द इकट्ठा हुए परिजनों का एक समुदाय है, जिसे लेखक अपनी जीवन भर की संचित पूँजी और वंश-परम्परा से अधिक महत्त्वपूर्ण मानते हैं।
- **वाणी (के तीन स्तर)** -
 - **बैखरी वाणी**: यह जीभ से निकलती है, कानों से सुनी जाती है और मस्तिष्क को जानकारी देती है। यह केवल कथन-श्रवण का उपक्रम है।
 - **मध्यमा वाणी**: यह सूक्ष्म शरीर (परिकर) से संबंधित है।

- परावाणी: यह कारण क्षेत्र से संबंधित है और इसका प्रभाव मध्यमा वाणी के साथ मिलकर व्यक्ति के अंतर्मन की गहराई तक उतरता है।

- मानवीय चेतना के तीन शरीर -

- स्थूल शरीर: चेतना का सबसे बाहरी और भौतिक स्वरूप।
- सूक्ष्म शरीर: चेतना का दूसरा स्तर।
- कारण शरीर: चेतना का तीसरा और सबसे गहरा स्तर।